राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय पहचान

डॉ0 अवधेश कुमार पाण्डेय*

सारांश

राष्ट्र निर्माण की अवधारणा एक व्यापक व जटिल प्रक्रिया है, जिसमें अनेक दशाओं का समावेश होता है। इसमें अनेक संरचनात्मक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक विशेषताओं का समावेश होता है। इस प्रकार राष्ट्र निर्माण एक मिश्रित अवधारणा है। संरचनात्मक आधार पर राष्ट्र निर्माण का सम्बन्ध एक देश के सभी निवासियों को विकास व अधिकार के समान अवसर प्राप्त होना है। सांस्कृतिक आधार पर राष्ट्र निर्माण एक ऐसी राष्ट्रीय संस्कृति के विकास से है, जिसे विभिन्न समूह व समुदाय अपनी संस्कृति से अधिक महत्वपूर्ण समझने लगे। तथा वैचारिक आधार पर राष्ट्र निर्माण का अभिप्राय राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर देश के सभी निवासियों के विचारों एवं मनोवृत्तियों में समानता उत्पन्न होना है।

स्वतंत्रता से पूर्व भारत में राष्ट्र निर्माण में गांधी युग का सबसे अधिक महत्व है। जो सन् 1919 से 11947 तक माना जाता है। इस काल में अनेक ऐसी घटनाएं हुई जिनके फलस्वरूप एक ओर महात्मा गांधी द्वारा चलाये जाने वाले अहिंसक आन्दोलन से लोगो में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, तो दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी राष्ट्रभक्तों के देशप्रेम ने जन साधारण में राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करना आरम्भ कर दिया। स्वतन्त्रता से पूर्व होने वाले आन्दोलन के फलस्वरूप ही भारत में सबसे पहले सभी धर्मों जातियो और वर्गो के लोगो ने मिलजुलकर अंग्रेजों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इसी के फलस्वरूप भारत में एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्रवाद की नींव पड़ी।

राष्ट्र निर्माण शब्द मुख्यतः राष्ट्र के विकास की अवधारणा का एक व्यवहारिक पक्ष है। राष्ट्र निर्माण का सभी देशों के लिये एक विशेष महत्व है, परन्तु नवोदित एवं विकासशील राष्ट्रों में यह एक आवश्यकता होने के साथ ही एक समस्या भी है। राष्ट्र निर्माण का सम्बन्ध मुख्यतः सम्बन्धित राष्ट्र के लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय पर आधारित राष्ट्रीय एकीकरण से है।

सन् 1789 में फ्रान्स की क्रान्ति राष्ट्र निर्माण रुपी भवन की इकाई ईंट है, जिसके फलस्वरुप फ्रान्स के तत्कालीन शासन लुई सोलहवें के राजतंत्र का अन्त हुआ एवं राजतंत्रीय शासन व्यवस्था के स्थान पर लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई। फ्रान्स की क्रान्ति ने पूरे विश्व में चिन्तन की ऐसी धारा पैदा की जो स्वतंत्रता, भाईचारे और राष्ट्रवादी विचारों पर आधारित थी। यद्यपि राष्ट्रवाद की प्रकृति विभिन्न देशों में एक दूसरे से भिन्न रही। जैसे यदि यूरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरुप आये परिवर्तन पर प्रकाश डालें तो यह पायेंगे कि फ्रान्स एवं इंग्लैण्ड में राष्ट्रवाद का उदय एक राजनीतिक घटना के रुप में हुआ जबकि जर्मनी एवं इटली में विभिन्न भाषायी, प्रजातीय और संजातीय समूहों के एकीकरण को राष्ट्रवाद का आधार माना जाने लगा।

उक्त घटना का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। भारत के राष्ट्रवाद का उदय, उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से होने वाले स्वतन्त्रता संग्राम के साथ हुआ तथा सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद यह धीरे–धीरे निरन्तर जोर पकड़ता गया।

भारत में राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय पहचान की प्रकृति को समझने से पूर्व राष्ट्रवाद की अवधारणा को स्पष्ट करना आवश्यक है–

* प्रवक्ता, समाजशास्त्र, बुद्धा पी0जी0 कालेज–कुशीनगर

राष्ट्र हेतु प्रयुक्त अंग्रेजी का शब्द Nation लैटिन भाषा के शब्द Notio से बना है, जिसका अर्थ है एक ही स्थान या एक प्रजाति में जन्म होना। अर्थात् समान जन्म स्थान अथवा प्रजाति से सम्बन्धित लोगों में अपने क्षेत्र से सम्बन्धित हम भावना को ही राष्ट्र मान लिया गया। राष्ट्र को स्पष्ट करते हुये जे0एस0मिल0 ने लिखा है ''राष्ट्र मानव जाति का ऐसा साधन है जो अन्य लोगों की तुलना में एक दूसरे के पारस्परिक सहानुभूति के आधार पर संगठित होता है। तथा जिसमें एक ही सरकार के अधीन रहने की प्रबल इच्छा होती है। इससे स्पष्ट है कि एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, उस क्षेत्र की सरकार की प्रभुसत्ता तथा विभिन्न समूह राष्ट्र के स्थूल तत्व हैं एवं निश्चित क्षेत्र में निवासियों के बीच संयुक्तता की भावना तथा अपने देश या क्षेत्र के प्रति लगाव राष्ट्र के अमूर्त तत्व हैं।

राष्ट्र की अवधारणा से सम्बन्धित दूसरा शब्द ''राष्ट्रवाद'' (Nationalism) या ''राष्ट्रीयता'' (Nationality) है। ''राष्ट्रवाद चिन्तन की एक ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति अपने धर्म, जाति या क्षेत्र की भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च निष्ठा रखते हैं।''

राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में ''प्रो0 जिर्मन ने लिखा है ''राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीयता एक मानसिक दशा है, यह अनुभव करने, विचार करने और जीवन व्यतीत करने का ऐसा ढंग है जिसका सन्दर्भ राष्ट्र होता है।'' अर्थात जब एक राष्ट्र से सम्बन्धित सभी व्यक्ति और समूह मानसिक रुप से इस तरह संयुक्त हो जाते हैं कि वे व्यक्तिगत हितों की तुलना में राष्ट्रीय हितों को अधिक महत्व देने लगते हैं, तब इसी दशा में हम राष्ट्रवाद कहते हैं।

भारत के राष्ट्रवाद का उदय इंग्लैण्ड के साम्राज्यवाद से प्रभावित होने के कारण इसका स्वरुप स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अधिक स्पष्ट रहा लेकिन अनेक आन्तरिक विभेदों एवं बाहरी शक्तियों के कारण स्वतंत्रता पश्चात इसका रुप कमजोर पड़ने लगा। यही कारण है कि आज भारत में हमें एक बार पुनः राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्रीय पहचान के बारे में जागरुक होने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

राष्ट्र निर्माण की अवधारणा एक व्यापक व जटिल प्रक्रिया है जिसमें अनेक दशाओं का समावेश होता है। इसमें अनेक संरचनात्मक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक विशेषताओं का समावेश होता है। इस प्रकार राष्ट्र निर्माण एक मिश्रित अवधारणा है। संरचनात्मक आधार पर राष्ट्र निर्माण का सम्बन्ध एक देश के सभी निवासियों को विकास और अधिकार के समान अवसर प्राप्त होना है। सांस्कृतिक आधार पर राष्ट्र निर्माण का सम्बन्ध एक ऐसी राष्ट्रीय संस्कृति के विकास से है, जिसे विभिन्न समूह और समुदाय अपनी संस्कृति से अधिक महत्वपूर्ण समझने लगे। तथा वैचारिक आधार पर राष्ट्र निर्माण का अभिप्राय राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर देश के सभी निवासियों के विचारों एवं मनोवृत्तियों में समानता उत्पन्न होना है।

राष्ट्र निर्माण के सम्बन्ध में जी0एस0 घुरिये ने लिखा है, ''राष्ट्र निर्माण एक मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक प्रक्रिया है जिसमें राष्ट्र के प्रति लोगों में एकता, दृढ़ता और पारस्परिक सम्बद्धता की भावनाओं को विकसित किया जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो राष्ट्र के प्रति वफादारी की भावना को सुदृढ़ करती है।''

राष्ट्र निर्माण हेतु आवश्यक कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है–

(1) राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया सम्बन्धित राष्ट्र के समस्त व्यक्तियों तथा समूहों में राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं स्वामी भक्ति की भावना विकसित करती है।

(2) राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया क्रमिक रुप से धीरे–धीरे चलती रहती है।

(3) राष्ट्र निर्माण एक ऐसी चेतन प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने निजी हितों की तुलना में राष्ट्र के हितों के प्राथमिकता देने की प्रेरणा एवं प्रशिक्षण देती है।

(4) राष्ट्र निर्माण में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं नेतृत्व की विशेष भूमिका होती है।

भारत में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया वैसे तो राजनीतिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से सम्राट अशोक काल में प्रारम्भ हो गया था जिसमें सम्राट अशोक ने पूरे भारत को एकता के सूत्र में बांधा था। मुगल काल में भी अकबर के शासनकाल में भारतीयता की भावना को बल मिला था। किन्तु ब्रिटिश काल में ब्रिटिश शासन के शोषणकारी व अन्यायपूर्ण व्यवहार के प्रतिक्रियास्वरुप भारत में राष्ट्रवाद का वर्तमान स्वरुप अधिक स्पष्ट हुआ। इस प्रकार जब अंग्रेजों ने भारत में अपने उपनिवेशवादी शासन को मजबूत बनाने के लिये भारत के विभिन्न वर्गों का आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक शोषण करना आरम्भ कर दिया तो धीरे–धीरे बहुत से भारतवासी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित होकर भारत की आजादी के लिये प्रयत्न करने लगे। इसी असंतोष के फलस्वरुप 1857 की राजनीतिक क्रान्ति हुई जिसे अंग्रेजों ने 'गदर' नाम दिया। व्यापक जनचेतना एवं जनसमर्थन के अभाव में यह क्रान्ति असफल हो गयी लेकिन यहीं से भारतीय को देश–प्रेम और देश–भक्ति की जो भावना आरम्भ हुई, उसके फलस्वरुप यहां राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी।

राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द, रानाडे, रामकृष्ण परमहंस, दयानन्द सरस्वती तथा केशव चन्द्रसेन जैसे अनेक लोगों ने भारतीय संस्कृति तथा धर्म के गौरवशाली इतिहास के आधार पर समाज को पुनः संगठित करने का प्रयत्न किया तो दूसरी ओर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा दूसरे अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा लोगों में स्वदेशी और देश प्रेम की भावना को जगाने का काम किया। इसी समय पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव में समाज में एक ऐसा मध्यम वर्ग तैयार हो गया जिसने वैयक्तिक स्वतंत्रता समानता और सामाजिक न्याय के अधिकार की मांग की। भारत के इस शिक्षित वर्ग को एक मंच पर लाने तथा उन्हे ब्रिटिश शासन की नीतियों से जोड़ने के उद्देश्य से ही एक अंग्रेज अधिकारी ए0ओ0ह्यूम ने सन् 1885 में ''भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस'' की स्थापना की। सन् 1905 में कांग्रेसियों के अन्दर ही एक ऐसा वर्ग तैयार हो गया जिन्हे उग्र राष्ट्रवादी का जाता है। इनमें लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष आदि के नाम महत्वपूर्ण है। इन्होंने स्वदेशी की मांग और विदेशी वस्तुओं के बॉयकाट को एक आन्दोलन का रुप देकर लोगों में अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति चेतना पैदा करना आरम्भ कर दिया। उग्र राष्ट्रवादियों के प्रभाव को कम करने के लिये ही अंग्रेज सरकार ने सैय्यद अहमद खाँ की सहायता से सन् 1906 में भारत में ''आल इण्डिया मुस्लिम लीग'' की स्थापना करवा ली।

स्वतंत्रता से पहले तक भारत में राष्ट्र निर्माण में गांधी युग का सबसे अधिक महत्व है जो सन् 1919 से 1947 तक माना जाता है। इस काल में अनेक ऐसी घटनायें हुई जिनके फलस्वरुप एक ओर महात्मा गांधी द्वारा चलाये जाने वाले अहिंसक आन्दोलन से लोगों में राष्ट्र चेतना पैदा हुई तो दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारियों के देश–प्रेम ने जन साधारण में राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करना आरम्भ कर दिया। स्वतंत्रता से पूर्व होने वाले आन्दोलन के फलस्वरुप ही भारत में सबसे पहले सभी धर्मों, जातियों और वर्गों के लोगो ने मिल जुल कर अंग्रेजो का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इसी के फलस्वरुप यहाँ एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद की नींव का निर्माण हुआ।

भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात 26 जनवरी 1950 से जब नया संविधान लागू हुआ तो भारत को एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष तथा समताकारी कल्याण राज्य घोषित किया गया। राष्ट्र निर्माण की दिशा में 1954 से समताकारी कानूनों के निर्माण की प्रक्रिया को बहुत महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। सामाजिक सुधार के लिये बने अनेक कानूनों ने भारत को एक धर्म निरपेक्ष समाज बनाने तथा सामाजिक असमानताओं को दूर करने में बहुत योगदान दिया।

राष्ट्रीय पहचान

राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्रीय पहचान की अवधारणायें परस्पर सम्बन्धित है। यह दोनों अवधारणायें एक ही प्रक्रिया के दो स्तर हैं। राष्ट्र के प्रति भावात्मक एकता का विकास ही राष्ट्र निर्माण है। राष्ट्रीय पहचान से प्रक्रिया का लक्ष्य है अर्थात जब एक राष्ट्र से सम्बन्धित सभी वर्ग और समुदाय राष्ट्रीयता की भावना से बंध जाते हैं तब उनकी पहचान किसी विशेष धर्म, भाषा या क्षेत्र से न होकर केवल राष्ट्र के सन्दर्भ में होने लगती है। आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जब किसी राष्ट्र का एक विशेष प्रारुप बन जाता है तथा इसी प्रारुप के सन्दर्भ में वहां के निवासियों को पहचाना जाने लगता है तब इसी को राष्ट्रीय पहचान कहा जाता है जिसे विकसित करना आज सभी विकसित और विकासशील राष्ट्र अपना लक्ष्य मानते हैं।

वास्तव में राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय पहचान एक सकारात्मक अवधारणायें हैं। भारतीय समाज में फैली हुई सामाजिक असमानताओं को दूर करके तथा आर्थिक विकास के द्वारा ही राष्ट्र की अलग पहचान बनायी जा सकती है। वास्तव में राष्ट्र निर्माण का सम्बन्ध हमारी मनोवृत्तियों, विचारों और सांस्कृतिक एकता से है। भारतीय संस्कृति में अनके उतार चढ़ाव के बाद भी एक निरन्तरता बनी हुई है जिससे संसार ने बहुत कुछ सीखा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. Bogardus E.S. : Sociology, Macmillan Co.
2. Mukherjee R.K. : Regional Sociology
3. Mukherjee D.P. : Diversities, P.P. House, New Delhi
4. Myrdal Gunnar : Asian Drama Vol. 1
5. मुखर्जी आर0एन0 : भारतीय समाज व संस्कृति, दिल्ली
6. श्रीवास्तव ए0एल0 : भारत की सामाजिक समस्याएं, इलाहाबाद
7. त्रिपाठी सत्येन्द्र : सामाजिक विघटन, लखनऊ
8. सिंह श्यामधर एवं सिंह मीरा : सामाजिक समस्याओं का समाजशास्त्र, वाराणसी

●